शुल्क १५ वर्ष
३१००/- रुपये

विज्ञप्ति

एक प्रति १०/- रुपये
वार्षिक ३००/- रुपये

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष २३ : अंक ६ : नई दिल्ली : २६ मई-०१ जून २०१७

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण आदि श्रमण और महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी आदि श्रमणियां कोलकाता की ओर विहार करते हुए वर्धमान पधार गए हैं। अब कोलकाता बिल्कुल सन्निकट है। चार जून को आचार्यप्रवर कोलकाता की महानगर सीमा में प्रविष्ट हो जाएंगे। तदुपरान्त कोलकाता के विभिन्न उपनगरों के यात्रा-प्रवास का कार्यक्रम पूर्व निर्धारित है। १८ जून को कोलकाता के नेताजी इंडोर स्टेडियम में आचार्यप्रवर का भव्य नागरिक अभिनंदन समारोह समायोजित होगा। ३० जून को समायोज्य दीक्षा समारोह में आचार्यप्रवर एक भाई को मुनि दीक्षा तथा तीन मुमुक्षु बहनों को समणी दीक्षा प्रदान करेंगे। आचार्यप्रवर २ जुलाई को नवनिर्मित महाश्रमण विहार में भव्य मंगल प्रवेश करेंगे। चतुर्मास व्यवस्थाओं की तैयारियों को अंतिम रूप दिया जा रहा है। पूज्यप्रवर के चतुर्मास के संदर्भ में कोलकातावासियों में अतिशय उल्लास और उत्साह का वातावरण है।

परम पूज्य आचार्यप्रवर कोलकाता की ओर

मल्लारपुर में पावन पदार्पण

१५ मई। परमाराध्य आचार्यप्रवर सूर्योदय के आसपास रामपुरहाट में विराजमान थे। एक मुस्लिम भाई आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में पहुंचा। उसने आचार्यप्रवर से पूछा--'क्या आप लोग सच में भारत के उन्नीस राज्यों की पैदल यात्रा कर रहे हैं?' आचार्यप्रवर ने स्वीकृति प्रदान की तो वह बोला--'मैंने इससे पहले कभी नहीं सुना कि किसी आदमी ने इतनी लंबी पैदल यात्रा की हो। इसलिए मैं देखने चला आया। आप बहुत-बहुत अच्छा कार्य कर रहे हैं।' आचार्यप्रवर ने उसे अहिंसा यात्रा के तीनों आयामों की जानकारी दी तो वह बोला--'हां, यही तो मजहब है।'

परमाराध्य आचार्यप्रवर रामपुरहाट से मल्लारपुर के लिए प्रस्थित हुए। प्रातःकाल से आकाश मेघाच्छन बना हुआ था। इस कारण सूर्य के आतप से अनायास बचाव हो रहा था।

मार्ग में एक स्थान में बायीं ओर करीब नौ किमी भीतर स्थित तारापीठ के विषय में लोगों ने अवगति प्रस्तुत की। महापीठ पुराण के अनुसार तारापीठ ५१ शक्तिपीठों के अंतर्गत माना जाता है। किंवदंती के अनुसार दक्षयज्ञ में न बुलाए जाने और स्वयं पहुंचने के बाद उपेक्षा के कारण अपमानित महसूस करती हुई सती (पार्वतीजी) ने यज्ञ कुण्ड में कूदकर आत्मदाह कर लिया था। शिव ने दुःख और क्रोध में वहां पहुंचकर यज्ञ भंग कर दिया और सती के शव को लेकर दुःख में निमग्न होकर इधर-उधर फिरने लगे। उन्हें दुःख से उबारने के लिए विष्णु ने सती के शव को अपने चक्र से टुकड़ों में काटकर छितरा दिया। शक्तिपीठों की स्थापना उन्हीं स्थानों पर हुई जहां-जहां सती के अंग पृथ्वी पर गिरे थे। जहां सती का उर्ध्व नेत्र गिरा, वहां तारापीठ की स्थापना हुई।

पदविहार के दौरान तारापीठ चकपाड़ा के ग्रामीण आचार्यप्रवर के दर्शन और पावन पथदर्शन से लाभान्वित हुए। मार्गस्थ अनेक 'मिलों' के बाहर उनसे संबद्ध श्रद्धालुओं और कर्मचारियों ने आचार्यप्रवर के दर्शन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया। अनेक कर्मचारियों ने नशामुक्ति का संकल्प भी स्वीकार किया। मल्लारपुर आश्रम के विद्यार्थियों को भी आचार्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीष प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। श्री सत्यसाईं

रामकृष्ण आश्रम से संबद्ध लोगों की प्रार्थना पर आचार्यप्रवर आश्रम के भीतर पधारे। आश्रम से जुड़े लोगों ने पूज्यप्रवर का स्वागत करते हुए आश्रम संबंधी अवगति प्रस्तुत की।

मल्लारपुर में आचार्यप्रवर का पदार्पण स्थानीय लोगों को हर्षाभिभूत बनाए हुए था। तेरापंथ समाज ही नहीं, अन्य जैन एवं जैनेतर समाज भी पूज्यप्रवर के स्वागत में बड़ी संख्या में सोल्लास उपस्थित था। मल्लारपुर की गलियों में आज अलौकिक वातावरण छाया हुआ था। हर कोई शांतिदूत आचार्यप्रवर के दर्शन को बेताब था। आसपास के कई गांवों से समागत जैनेतर लोग कीर्तन मंडली के रूप में अपने हाथों को ऊपर की ओर लहराते हुए 'जय-जय ज्योतिचरण जय-जय महाश्रमण' का भक्ति के साथ लयबद्ध संगान कर रहे थे। बंगाली लहजे और नई धुन में यह चिरपरिचित घोष और भी कर्णप्रिय लग रहा था। १३.३ किमी का विहार कर आचार्यप्रवर मल्लारपुर स्थित जैन भवन में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में पूज्यप्रवर के पदार्पण से पूर्व महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी का उद्‌बोधन हुआ।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप--यह मोक्ष मार्ग है। ज्ञान से आदमी जानता है। जीवन में ज्ञान का अत्यंत महत्त्व होता है। उससे ज्यादा पवित्र कोई वस्तु नहीं होती। ज्ञान के बिना आदमी अच्छा कार्य कैसे कर सकता है। दो शब्द हैं-मूर्ख और मूढ़। ये दोनों शब्द ऊपरी तौर पर समान लग सकते हैं, किन्तु गहराई में जाने पर दोनों में भिन्नता भी दिखाई दे सकती है। जिसमें ज्ञान का अभाव है, वह मूर्ख है और जिसमें मोह का प्रभाव ज्यादा है, वह मूढ़ है। आदमी को अपने ज्ञान का विकास करना चाहिए। देव, गुरु, धर्म और यथार्थ पर दृढ़ श्रद्धा रखनी चाहिए। पाप कर्मों का त्याग करना व विरत होना चारित्र होता है। शुभ योग में रहना तपस्या है। ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप की आराधना करने वाला व्यक्ति मोक्ष की दिशा में आगे बढ़ जाता है।'

आचार्यप्रवर से प्रेरणा प्राप्त कर मल्लारपुरवासियों ने अहिंसा यात्रा के तीनों संकल्प ग्रहण किए। पूज्यप्रवर के प्रवचन के उपरान्त मुख्यनियोजिकाजी का वक्तव्य हुआ।

मल्लारपुर पंचायत समिति के अध्यक्ष श्री धीरेन्द्र बनर्जी ने कहा--'मैं मल्लारपुर पंचायत समिति के अध्यक्ष होने के नाते अपने आपको आज धन्य महसूस कर रहा हूं कि आप जैसे महापुरुष के दर्शन करने और प्रवचन सुनने का मौका मिला। मल्लारपुर की धरती आपके आगमन से धन्य हो गई। मैं अपने जीवन में आपके उपदेशों का पालन करने की कोशिश करूंगा।'

तेरापंथी सभा अध्यक्ष श्री सुरेशकुमार छाजेड़, श्री रोहित छाजेड़, सुश्री अनुप्रेक्षा छाजेड़, बालिका जैनिका बुच्चा, डा. विमल छाजेड़ ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपनी-अपनी श्रद्धाभिव्यक्ति दी। जैन समाज महिला मंडल द्वारा स्वागत गीत का संगान किया गया। स्थानीय छाजेड़ परिवार ने अपने आराध्य के स्वागत में गीत प्रस्तुत किया। जैन विश्वभारती मान्य विश्वविद्यालय के पूर्व और प्रथम कुलपति श्री महावीरराज गेलड़ा ने अपनी नई पुस्तक 'जैनिज्म इन १३ चेप्टर्स' के विषय में अवगति दी।

पूज्यप्रवर ने इस संदर्भ में कहा--'डा. एम.आर. गेलड़ा जैन विश्वभारती इंस्टीट्यूट के प्रथम कुलपति रहे थे। मैं उसका साक्षी रहा हूं। एक विद्वान व्यक्ति हैं। 'जैनिज्म इन १३ चैप्टर्स' पुस्तक अंग्रेजी भाषा में है। चूंकि यह अमेरिका में छपी है तो हम कामना करें कि अमेरिका के प्रबुद्ध लोगों को इस पुस्तक से लाभ मिले, वे भी जैन धर्म और अहिंसा आदि के बारे में अच्छी जानकारी प्राप्त कर सकें। गेलड़ा साहब अपनी बौद्धिकता का खूब अच्छा उपयोग करते रहें और अच्छी साधना करते रहें।'

आज स्थानीय विधायक श्री अभिजीत राय और एसडीपीओ श्री धृतिमान सरकार ने आचार्यप्रवर के दर्शन कर पावन पथदर्शन प्राप्त किया। रात्रि करीब दस बजे के आसपास तेज तूफान के साथ तेज बारिश शुरू हुई, जो उमसयुक्त वातावरण को शीतल बनाकर थम गई।

५८ वर्षों बाद आराध्य के आगमन से आह्लादित हुए सैंथियावासी

१६ मई। परम पावन आचार्यप्रवर ने प्रातः मल्लारपुर से सैंथिया की ओर प्रस्थान किया। सैंथिया के उत्साही श्रद्धालु अलसुबह ही आचार्यप्रवर की अगवानी में पहुंच गए। विहार के दौरान प्रसन्नोपुर, गदाधापुर और लकपाड़ा के ग्रामीणजनों को आचार्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीर्वाद प्राप्त करने का सौभाग्य मिला। नमो मन्देरिया प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों ने मार्ग में आचार्यप्रवर के दर्शन किए तो पूज्यप्रवर ने उन्हें मंगल आशीष प्रदान की। मार्गस्थ कुछ फैक्ट्रियों के आसपास उनसे जुड़े लोगों ने आचार्यप्रवर के दर्शन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया। आचार्यप्रवर के निर्देशानुसार मुख्यमुनिश्री ने अनेक कर्मचारियों को शराबमुक्ति का संकल्प करवाया। लकपाड़ा में तो सैंकड़ों ग्रामीणजन पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ कतारबद्ध खड़े थे। आचार्यप्रवर के सम्मुख वे भक्तिमान लोग पचांग अथवा साष्टांग वंदन कर रहे थे। आचार्यप्रवर के पदार्पण के संदर्भ में ग्रामीणों ने आज सड़क को धोकर साफ किया था।

आचार्यप्रवर के स्वागत में सैंथियावासियों ने पलक-पांवड़े बिछा दिए। स्थानीय विधायक श्रीमती लीलावती शाह, नगरपालिका अध्यक्ष श्री विप्लव दत्ता, डीएसपी श्री आनंद सरकार के नेतृत्व में लोगों ने आचार्यप्रवर की भावभीनी अगवानी की। भव्य स्वागत जुलूस में स्थानीय जनता का उल्लास मुखर बना हुआ था। बंगाली लोग यत्र-तत्र शंख ध्वनि और उललूकनाद से पूज्यप्रवर के चरणों में अपनी विनयांजलि अर्पित कर रहे थे। जुलूस मार्ग के दोनों ओर खड़े हजारों लोग करबद्ध होकर अहिंसा यात्रा प्रणेता को नमन कर रहे थे तो परमाराध्य आचार्यप्रवर अपने करकमलों से उन पर आशीषवृष्टि कर रहे थे। करीब ५८ वर्षों बाद तेरापंथ के आचार्यप्रवर का पावन पदार्पण स्थानीय तेरापंथी श्रद्धालुओं को ही नहीं, अन्य जैन एवं जैनेतर समाज के लोगों को भी हर्षाभिभूत बनाए हुए था। चारों ओर अलौकिक वातावरण छाया हुआ था। अग्रवाल समाज के लोग जुलूस में संभागी लोगों के लिए पेय पदार्थों की व्यवस्था किए हुए थे। भगवान महावीर और अहिंसा यात्रा पर आधारित चल झांकियां तथा चंडकौशिक सर्प द्वारा भगवान महावीर को डसना, शनिवार की सामायिक, आचार्य तुलसी की सेवा में सुगनचंदजी आंचलिया आदि अचल झांकियां लोगों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट कर रही थीं।

सैंथिया में करीब ५८ वर्षों पूर्व आचार्य तुलसी ने मर्यादा महोत्सव किया था। बताया गया कि उस समय गुरुदेव का प्रवास श्री सुगनचंद रामकुमार आंचलिया परिवार के निवास स्थान में हुआ था। आचार्यप्रवर मार्गस्थ उस मकान में पधारे और कुछ क्षण आसीन हुए। वर्तमान में इस मकान में श्री रामकुमार आंचलिया परिवार प्रवासित है। लोगों के अनुरोध पर आचार्यप्रवर ने उस स्थान की ओर कुछ आगे बढ़कर दृष्टिपात किया, जहां के लिए बताया गया कि उस प्रवास के दौरान यहां गुरुदेव का दैनन्दिन प्रवचन होता था।

तालतला मोड़ से शुरू हुआ भव्य स्वागत जुलूस ओलकांदी रोड, चारतला मोड़, रेलवे ब्रिज, मोहबागान मोड़ होते हुए ओसवाल जैन भवन में पहुंचा। पूज्यप्रवर का सैंथिया का त्रिदिवसीय प्रवास यहीं हुआ। आचार्यप्रवर प्रवास कक्ष में पधारने से पूर्व इसी परिसर में स्थित आदिनाथ मंदिर में भी पधारे।

लालू बाबू की मोड़ पर स्थित बसस्टैण्ड में निर्मित अहिंसा समवसरण में समायोजित मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में पूज्यप्रवर के प्रवचन के पदार्पण से पूर्व मुख्यनियोजिकाजी का वक्तव्य हुआ। पूज्यप्रवर के पदार्पण के उपरान्त महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने सैंथिया से संबंधित तेरापंथ के इतिहास की आंशिक अवगति देते हुए सैंथियावासियों को आचार्यप्रवर के त्रिदिवसीय प्रवास का पूरा लाभ उठाने की प्रेरणा दी।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'आदमी के जीवन में प्रतिकूलताएं आ सकती हैं तो अनुकूलताएं भी मिल सकती हैं। कभी सम्मान मिल सकता है तो कभी अपमान भी हो सकता है। आरोह-अवरोह की स्थितियां भी जीवन में आ सकती हैं। विभिन्न परिस्थितियों से अप्रभावित रहने के लिए समता का अभ्यास करना चाहिए। हम अपने जीवन में समतायोगी बनने का प्रयास करें। जीवन में सुखी रहने

का यह सबसे अच्छा उपाय है। आदमी में परिस्थितियों की परवशता नहीं रहनी चाहिए।

यह भूमि भगवान महावीर की विहरण भूमि कही जाती है। कहां-कहां भगवान महावीर के चरणकमल टिके, किस-किस जगह उन्होंने विराम लिया, पड़ाव किया, ध्यान-साधना की, निश्चयतः तो केवली जाने, परन्तु इसे भगवान महावीर की विहरण भूमि कहा जाता है। मैं आ रहा था तो बताया गया कि कुछ दूरी पर चण्डकौशिक का स्थान है। मार्ग में एक झांकी भी थी, जिसमें चंडकौशिक सर्प चित्रित किया था। भगवान महावीर के साथ मानों चंडकौशिक भी ख्यातनामा हो गया। बड़ों के साथ जुड़ने से छोटा भी प्रसिद्धि को प्राप्त हो जाता है। आमतौर पर संभवतः अमावस्या को थोड़ा-सा असम्मान या अवहेलना की दृष्टि से देखा जाता है, किन्तु कार्तिकी अमावस्या पर लोगों में कितना उत्साह होता है। वह अमावस्या भगवान महावीर के नाम से जुड़ गई और ख्यातनामा हो गई। भगवान महावीर का परिनिर्वाण कार्तिकी अमावस्या को हुआ था। जो भगवान महावीर के साथ जुड़े, वह गौरव को प्राप्त कैसे नहीं हो। भगवान महावीर से जुड़कर अमावस्या भी धन्य हो गई, कृतपुण्य हो गई।

हम लोग पावापुरी के जलमंदिर में भी जाकर आए हैं, जहां के लिए प्रख्यात और प्रज्ञात है कि यहां परम प्रभु महावीर के पार्थिव देह का अंतिम संस्कार हुआ था। कार्तिकी अमावस्या पावापुरी से जुड़ी हुई है। अमावस्या यों तो अंधेरी रात है, परन्तु उसे दीपकों ने ग्रहण कर लिया, इसलिए अमावस्या भी महोत्सव बन गई। भगवान महावीर के प्रसंग में चंडकौशिक सर्प का भी नाम लिया जाता है। आदमी को जितना संभव हो सके, महान लोगों की संगति में रहने का प्रयास करना चाहिए, ताकि जीवन में महत्ता का कुछ अंश भी आ सके। भगवान महावीर के लिए कहा गया कि देवों के राजा इन्द्र ने नमस्कार किया या चंडकौशिक सर्प ने डसा, दोनों स्थितियों में जो समचित्त रहे, ऐसे परमात्मा परमप्रभु महावीर को नमस्कार। भगवान महावीर ने मानों समता को आत्मसात कर लिया था। दुनिया में उनसे बड़ा समता का साधक कौन हो सकता है? समता की साधना में भगवान महावीर को एक परम उदाहरण के रूप में देखा जा सकता है। गृहस्थ हो या साधु, समता की साधना दोनों को करनी चाहिए। संत को तो समता की विशेष साधना करनी चाहिए।'

आज हम परम पूज्य आचार्य तुलसी की मर्यादा महोत्सव की भूमि में आए हैं। सैंथिया का नाम तेरापंथ के मर्यादा महोत्सवों की सूची में जुड़ा हुआ है। तेरापंथ के संदर्भ में आचार्यों के चतुर्मास और मर्यादा महोत्सव विशेष प्रसंग होते हैं। सैंथिया भी तेरापंथ के आचार्यों के मर्यादा महोत्सवों की सूची में बद्ध है। करीब ५८ वर्ष पूर्व गुरुदेव तुलसी जहां पधारे थे, आज हम वहां आए हैं। मैं आंचलियाजी के मकान में भी गया था। बताया गया कि गुरुदेव तुलसी वहां विराजे थे। उनका मर्यादा महोत्सवकालीन प्रवास वहां हुआ था और वहां दैनन्दिन व्याख्यान होता था। मुझे निमित्त भी मिल गया है कि मुझे कुछ पेय पीना था, धूप थी तो मैंने सोचा कि घर में जाकर पी लेते हैं, छाया भी हो जाएगी और वह जगह भी दिख जाएगी। दोनों काम साथ में हो गए। आचार्यप्रवर से अहिंसा यात्रा के विषय में अवगति और प्रेरणा प्राप्त कर सैंथियावासियों ने संकल्पत्रयी स्वीकार की।

सैंथिया विधायक श्रीमती लीलावती शाह ने आचार्यप्रवर के स्वागत में कहा--'आचार्यश्री के पवित्र चरणों के स्पर्श से सैंथिया धन्य हो गया। केवल सैंथिया ही नहीं, अपितु आसपास का पूरा क्षेत्र पावन बन गया है। हम सभी सैंथियावासी आपको अपने बीच पाकर गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं। आप हमारे मार्गदर्शक बनकर मानव सभ्यता को अहिंसा, सत्य और न्याय के पथ पर अग्रसर कर रहे हैं। आपके उपदेशों की केवल भारत को ही नहीं, संपूर्ण विश्व को जरूरत है।'

वीरभूम सभाधिपति श्री विकास राय चौधरी ने कहा--'जिनकी विचारधारा आज पूरे विश्व के जनमानस को राह दिखा रही है, मैं वीरभूमवासियों की ओर से ऐसे महापुरुष को अपना प्रणाम निवेदित करता हूं। आपकी चरणरज से वीरभूम की माटी पावन बन गई है। आचार्यश्री सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति के

द्वारा पूरे विश्व को एक नई राह दिखा रहे हैं। आपके द्वारा दिखाए गए मार्ग पर हम अक्षरशः चलने का प्रयास करेंगे और इसे बड़े रूप में लोगों तक पहुंचाएंगे, यह हमारा संकल्प है।'

नया प्रजन्म पत्र की ओर से श्री कंचन सरकार, प्रवास व्यवस्था समिति के मंत्री श्री निर्मल छाजेड़, सैंथिया तेरापंथी सभा अध्यक्ष श्री गौतम छाजेड़ और तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष श्री सुमित छाजेड़ ने आचार्यप्रवर के स्वागत में अपनी भावाभिव्यक्ति दी। तेरापंथ महिला मंडल द्वारा गीत का संगान और श्रीचरणों में संकल्पों का उपहार प्रस्तुत किया गया। आचार्यप्रवर ने महिला मंडल की सदस्याओं को धारणानुसार संकल्प ग्रहण करवाए। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने अपनी प्रस्तुति के द्वारा पूज्यचरणों में अपने भावसुमन अर्पित किए।

सैंथिया रामकृष्ण मिशन आश्रम के स्वामी ध्रुवानंदजी महाराज ने कहा--'प्रातः स्मरणीय, परम वंदनीय आचार्यश्री से हमने जो तीन संकल्प लिए, उन्हें हमें जीवन भर निभाना है। मानव जाति के लिए कठोर परिश्रम करने वाले आचार्यश्री को मैं भक्तियुक्त प्रणाम करता हूं।'

शिष्यों का समर्पण, गुरु का अनुग्रह

सायंकाल सूर्यास्त के आसपास पूज्यप्रवर को जानकारी प्राप्त हुई कि जिस इमारत के प्रथम तल में संतों का प्रवास हो रहा है, उसी मकान और उसी तल में एक जैनेतर परिवार भी रहता है। हालांकि संतों और उस परिवार के आवागमन के मार्ग अलग-अलग थे और दोनों के बीच आवागमन का द्वार भी बंद था, किन्तु अनुशासन संहिता (चारित्रात्मा समुदाय) की धारा १३/३/१६ में लिखा गया है--'सामान्यतया बसते घरों में (जहां गृहस्थों का प्रवास हो रहा हो) साधु-साध्वियां प्रवास न करें। विहारों में एक रात का प्रवास किया जा सकता है। चिकित्सा व अन्य विशेष अपेक्षा की स्थिति में रहना पड़े तो आचार्यप्रवर से पूर्व स्वीकृति प्राप्त करें, कदाचित् वह संभव न हो सके तो बाद में निवेदन करें। एक मंजिल पूरी खाली (पुरुष-महिला कोई भी निवास न करे) हो तो उसे बसता घर न माना जाए।' इस धारा के आधार पर संत उस मंजिल में नहीं रह सकते थे। आचार्यप्रवर से निवेदन किया गया कि उस परिवार को तीन दिन के लिए यहां न रहने के लिए समझाया जा सकता है। आचार्यप्रवर ने फरमाया--'हमें किसी जैनेतर परिवार पर स्थान छोड़ने के लिए दबाव नहीं डालना चाहिए। इसलिए संत ही वह स्थान खाली कर दें।' चूंकि सूर्यास्त हो गया था, इसलिए पूज्यप्रवर ने मुनिवृंद को शीघ्र स्थान खाली करने का निर्देश प्रदान किया। मुनिवृंद ने आचार्यप्रवर के निर्देश का त्वरा के साथ पालन किया और उस तल को छोड़कर स्वनिश्रित उपकरणों के साथ भूमितल में स्थित हॉल में आ गए।

प्रतिक्रमण के उपरान्त आचार्यप्रवर को निवेदन किया गया कि वह परिवार रात्रि में वहां नहीं रहेगा। आचार्यप्रवर ने पूरी जानकारी कर फरमाया--'जब उस तल में कोई गृहस्थ नहीं है तो नियमानुसार संतों के रहने में भी कोई आपत्ति नहीं है। अतः संत वहां प्रवास कर सकते हैं। आचार्यप्रवर की अनापत्ति स्वीकृति प्राप्त कर मुनिवृंद पुनः स्वनिश्रित उपकरणों के सहित प्रथम तल पर चले गए।

अर्हतवंदना की परिसम्पन्नता के बाद आचार्यप्रवर के निर्देशानुसार स्थान निर्धारण प्रभारी मुनि दिनेशकुमारजी ने स्थान परिवर्तन के संदर्भ में संतों को हुए कष्ट के लिए खेद व्यक्त किया।

आचार्यप्रवर ने मुनिवृंद को प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा--'देखो, हमें साधुत्व प्राप्त हुआ, यह हमारे जीवन की बहुत बड़ी उपलब्धि है। बैंक बैलेंस नहीं रखना, एक पैसा भी पास में नहीं रखना, अपने स्वामित्व में मकान-आश्रम नहीं रखना, सुविधा और संसाधनों के युग में पैदल चलना, खाना न बनाना और न ही बनवाना, ईर्या समिति पूर्वक चलना, गर्मी-सर्दी को सहना, गर्मी में भी बड़े-बड़े शहरों में रहे हुए बालमुनियों का बिना 'एसी' रहना आदि कितनी बड़ी बात है।

हमारे लिए यह सौभाग्य की बात है कि हमें जिनशासन मिला। भगवान महावीर हमारे देव हैं। वे महान समतापुरुष थे। उनसे बढ़कर समतापुरुष कौन हुआ होगा? कहते हैं चंडकौशिक का स्थान सैंथिया के पास

ही है। भगवान को चंडकौशिक ने डसा या इन्द्र ने नमस्कार किया, वे दोनों स्थितियों में किस प्रकार समतालीन रहे। इस प्रकार हमारे आराध्य महान आदर्श के रूप में हैं। यह हमारे लिए और भी ज्यादा भाग्य की बात है कि जिनशासन में भी हमें भिक्षुशासन मिला। लोगों के पास बड़ा मकान मिल सकता है, कारें मिल सकती हैं किन्तु ऐसा शासन तो भाग्य से ही मिल सकता है।' मुनि दिनेशकुमारजी ने पूज्यप्रवर से निवेदन किया--'पूज्यप्रवर का निर्देश मिलते ही सभी संत तुरन्त अपना सामान नीचे ले आए। आचार्यप्रवर ने फरमाया--'तेरापंथ में अनुशासन के प्रति बहुत जागरूकता है। आचार्यप्रवर के निर्देश के प्रति बहुत सम्मान का भाव है। आचार्यप्रवर ने मुनिवृंद की आज्ञानिष्ठा की श्लाघा करते हुए गुकुलवासस्थ सभी संतों को एक दिन छह विगय वर्जन से मुक्ति की बक्सीश प्रदान की।

प्रधानता मिले अहिंसा को

१७ मई। परमाराध्य आचार्यप्रवर के सैंथिया प्रवास का दूसरा दिन। पूज्यप्रवर सूर्योदय के कुछ समय पश्चात प्रवास स्थल से प्रस्थित हुए। आचार्यप्रवर ने अनेक अक्षम श्रद्धालुओं को उनके घरों में पधारकर उन्हें दर्शन दिए। अपने आराध्य के अनुग्रह में अभिस्नात श्रद्धालु और उनके परिजन आह्लादित थे। स्थानीय तेरापंथ युवक परिषद की प्रार्थना पर आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर में भी आचार्यप्रवर का पदार्पण हुआ। पूज्यप्रवर ने सेंटर के विषय में अवगति प्राप्त कर युवकों को मंगलपाठ सुनाया। पूज्यप्रवर श्री गौतम छाजेड़ परिवार के निवास स्थान में पधारे। आज का प्रातराश और मुख्य प्रवचन कार्यक्रम वहीं समायोजित हुआ। यह दुर्लभ सौभाग्य प्राप्त कर छाजेड़ परिवार धन्यता की अनुभूति कर रहा था।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में आचार्यप्रवर के पदार्पण से पूर्व मुख्यनियोजिकाजी का अभिभाषण हुआ। आचार्यप्रवर के पदार्पण से पूर्व और उपरान्त भी महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी का उद्‌बोधन हुआ। पूज्यप्रवर के पदार्पण के पश्चात मुख्यमुनिश्री और साध्वीवर्याजी के वक्तव्य हुए।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन के दौरान कहा--'अहिंसा एक ऐसा तत्व है, जिसके आधार पर जीवन में शांति और सुख का अनुभव किया जा सकता है। अहिंसा को परम धर्म कहा गया है। हिंसा और अहिंसा सापेक्ष तत्त्व हैं। मनुष्य जीवन हिंसा के बिना चलना मुश्किल है। साधु अहिंसा महाव्रत का पालन करता है। गृहस्थ को भी यथासंभव अहिंसा की आराधना करनी चाहिए। हिंसा के तीन प्रकार हैं--आरंभजा, प्रतिरक्षात्मिकी और संकल्पजा। रसोई खेती आदि में होने वाली हिंसा आरंभजा है। गृहस्थ के लिए यह गर्हणीय नहीं मानी गई। सुरक्षा के संदर्भ में होने वाली हिंसा प्रतिरक्षात्मिकी होती है। यह भी गृहस्थ के लिए गर्हणीय नहीं मानी गई। ये दोनों हिंसाएं गृहस्थ के लिए आवश्यक हिंसा की कोटि में हैं। आवेशजनित, इरादतन हिंसा संकल्पजा होती है। गृहस्थ को इस हिंसा से बचना चाहिए। दुनिया में अहिंसा को प्रधानता मिले। एक देश दूसरे देश के प्रति मैत्री भाव रखे। आदमी सभी प्राणियों के प्रति मैत्री भाव का प्रयोग करे, यह काम्य है। सांप हो या मच्छर, यथासंभव उन्हें मारना नहीं चाहिए। किसी की शांति को बाधित नहीं करना चाहिए। छोटी-छोटी बातों पर ध्यान देकर हिंसा से बचा जा सकता है।'

सैंथिया तेरापंथी सभा अध्यक्ष श्री गौतमंचद छाजेड़ ने अपने परिसर में प्रातराश व प्रवचन करने के संदर्भ में पूज्यचरणों में कृतज्ञता अर्पित की। सुश्री मीता सुराणा, श्रीमती नेहा दुगड़, श्रीमती वंदना छाजेड़ और सुश्री स्नेहा-प्रियंका पुगलिया ने आचार्यप्रवर की अभ्यर्थना में अपनी प्रस्तुति दी। छाजेड़ परिवार की महिलाओं ने गीत का संगान किया। छाजेड़ परिवार की ओर संवाद प्रस्तुत किया गया। मूर्तिपूजक समाज विकास मंडल की महिलाओं ने गीत का संगान किया।

कार्यक्रम के उपरान्त पूज्यप्रवर छाजेड़ परिवार के निवास स्थान से प्रस्थान कर पुनः ओसवाल जैन भवन में पधार गए।

आज सायंकाल सूर्यास्त के आसपास मौसम का रूप बदला। तेज तूफान के साथ हुई तेज वर्षा से वातावरण में शीतलता व्याप गई। दूसरी इमारत में स्थित संत वर्षा के कारण आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में आयोजित गुरुवन्दना और प्रतिक्रमण में संभागी नहीं बन पाए।

वयोवृद्ध साधिका पर अनुग्रह कर आतप में किया सात किमी परिभ्रमण

१८ मई। परम पूज्य आचार्यप्रवर के सैंथिया प्रवास का तीसरा दिन। पूज्यप्रवर ने प्रातः सूर्योदय के कुछ समय पश्चात कुछ अक्षम लोगों को उनके घरों में पधारकर दर्शन दिए। आचार्यप्रवर का यह अनुग्रह अक्षम लोगों और उनके परिवार को हर्षविभोर बनाए हुए था। पूज्यप्रवर पुनः प्रवास स्थल में पधार गए। कुछ समय पश्चात साढ़े तीन किलोमीटर दूरी पर स्थित समाचरण योगाश्रम की ओर से संतोष बनर्जी नाम के एक प्रौढ़ व्यक्ति ने आचार्यप्रवर से आश्रम में पधारकर ८५ वर्षीया ब्रह्मचारिणी अणुव्रताजी को दर्शन देने की प्रार्थना की। उन्होंने कहा कि ब्रह्मचारिणीजी की बहुत इच्छा है--'वे आपके दर्शन करें। अवस्था के कारण वे यहां नहीं आ सकतीं।' तेजस्वी सूर्य आकाश मार्ग में बढ़ता जा रहा था। ऐसे में आश्रम जाने से विलंब होने और आतप के प्रखर होने की संभावना स्पष्ट थी। प्रतिकूलता की संभावना पर भी आचार्यप्रवर की करुणा भारी पड़ी और पूज्यप्रवर ने करीब सात किलोमीटर की यात्रा स्वीकार कर ली। साध्वियां प्रातराश लेकर कुछ ही समय में पहुंचने वाली थीं। पूज्यप्रवर ने मुनिवृन्द को साध्वियों के स्थान पर भेजकर साध्वीप्रमुखाजी को सूचित करवाया कि हमारे आने में विलंब हो सकता है, इसलिए साध्वियां सवा नौ बजे प्रातराश लाएं।

पूज्यप्रवर कुछ ही क्षणों में आश्रम की ओर प्रस्थित हो गए। मार्ग में श्रीरामकृष्ण आश्रम के स्वामी ध्रुवानंदजी ने कुछ भीतर स्थित अपने आश्रम में पधारने की प्रार्थना की तो आचार्यप्रवर ने उन्हें फरमाया कि अभी हमें आगे जाना है। ध्रुवानंदजी ने कहा--'आप लौटते हुए अवश्य पधारें।' आचार्यप्रवर करीब साढ़े तीन किमी दूर स्थित समाचरण योगाश्रम के निकट पधारे, किन्तु द्वार के आसपास स्थित काई और हरियाली के कारण आचार्यप्रवर आश्रम के भीतर नहीं पधार सके। पूज्यप्रवर आश्रम के बाहरी भाग में ही आसीन हो गए। ब्रह्मचारिणी अणुव्रताजी धीरे-धीरे चलकर वहां पहुंच गईं। उन्होंने करबद्ध नतशिर होकर आचार्यप्रवर को भावपूर्ण वंदन किया। वे अपने हर्ष को अभिव्यक्त कर बोलीं--'आपके दर्शन कर मैं धन्य हो गई, यह आश्रम धन्य हो गया।' पूज्यप्रवर तीव्र धूप में विराजमान थे। यह देखकर वे बोलीं--'आप कितनी तपस्या करते हैं। भयंकर गर्मी में भी आप धूप में बैठे हैं।' उन्होंने पूज्यप्रवर के समक्ष आश्रम के विषय में अवगति प्रस्तुत की। आचार्यप्रवर ने 'प्रभु म्हारै मन मंदिर में पधारे' गीत का संगान किया। तदुपरान्त ब्रह्मचारिणीजी को मंगलपाठ सुनाकर पुनः प्रवास स्थल की ओर प्रस्थित हो गए।

आचार्यप्रवर लौटते समय श्रीरामकृष्ण आश्रम के सन्निकट पधारे तो मुख्यमार्ग से कुछ भीतर स्थित आश्रम से स्वामी ध्रुवानंदजी दौड़ते हुए मुख्यमार्ग की ओर आए। आचार्यप्रवर उन्हें देखकर आश्रम की ओर पधार गए। मार्ग में वे मिले तो बोले--'मैं इतनी देर से यहां खड़ा था। बस, आश्रम में गया ही था कि आप पधार गए।' आश्रम के मुख्यद्वार से उन्होंने आचार्यप्रवर के अभिनंदन में मंत्रोच्चार प्रारम्भ कर दिए। आश्रम से जुड़ी महिलाओं ने शंखनाद कर पूज्यप्रवर का स्वागत किया। पूज्यप्रवर वहां कुछ क्षण आसीन हुए तो उन्होंने आश्रम और समीपस्थ श्रीरामकृष्ण विद्यामंदिर के विषय में अवगति प्रस्तुत की। आचार्यप्रवर ने आश्रम के मंदिर परिसर में 'जहाहियग्गी जलणं नमंसे.....' श्लोक का उच्चारण किया।

प्रवास स्थल की ओर लौटते हुए आचार्यप्रवर सैंथिया थाना के निकट पधारे तो थानाप्रभारी श्री संजय श्रीवास्तव ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर मंगलपाठ का श्रवण किया। प्रखर आतप में आचार्यप्रवर का तनु रत्न पसीने से तर-बतर बना हुआ था। आचार्यप्रवर कुल करीब सात किमी का परिभ्रमण कर पुनः प्रवास स्थल में पधार गए।

नागरिक अभिनंदन समारोह

बस स्टैंड पर निर्मित अहिंसा समवसरण में समायोजित आज के मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में आचार्यप्रवर के नागरिक अभिनन्दन का उपक्रम रहा। कार्यक्रम में आचार्यप्रवर के पदार्पण से पूर्व महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी और मुख्यनियोजिकाजी के उद्‌बोधन हुए। महाश्रमणीजी ने आचार्यप्रवर के पदार्पण के उपरान्त भी जनता को उत्प्रेरित किया। साध्वीवर्याजी ने अपने वक्तव्य में जागरूक बनने की प्रेरणा दी।

नागरिक अभिन्दन समारोह में सैंथिया नगर के प्रथम नागरिक नगरपालिका अध्यक्ष श्री विप्लव दत्ता ने अपने श्रद्धासिक्त अभिभाषण में कहा--'आप जैसे महापुरुष का चरण स्पर्श पाकर सैंथिया की धरती धन्य और कृतपुण्य हो गई है। आपकी अहिंसा यात्रा के तीन महान उद्‌देश्य--सद्‌भावना, नैतिकता और नशामुक्ति वर्तमान युग की ज्वलंत समस्याओं का समाधान करने वाले हैं। इस कारण मेरा मानना है कि आपश्री का जन्म धरती और मानव जाति को अभिशापों से मुक्ति दिलाने के लिए ही हुआ है। आपके आगमन से एक दिन पूर्व हम सभी भीषण गर्मी के कारण व्यवस्थाओं को लेकर चिंतित थे, किन्तु आपके शुभागमन से पूर्व ही आपकी कृपा से हुई बरसात ने सैंथिया की धरती को तपन से मुक्त कर सरस और शीतल बना दिया। मैं संपूर्ण नगरवासियों की ओर से आपका हार्दिक अभिनन्दन करता हूं।'

सैंथिया नगरपालिका के उपाध्यक्ष श्री काजी कमाल हुसैन ने आचार्यश्री का अभिनन्दन करते हुए कहा--'मैं आचार्यश्री के चरणों में हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता हूं कि हमारी भूमि को अपनी चरणरज से पावन किया। आचार्यश्री! आपके आगमन की स्मृतियां हम सबके मानस पटल पर सदैव अंकित रहेंगी। आपसे हमें जो संदेश होगा, उसे हम सभी अपने जीवन में उतारने का प्रयास करेंगे।'

पूज्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में जीवन में संयम को आत्मसात करने की प्रेरणा प्रदान की। कार्यक्रम में आचार्यप्रवर ने ११.११ बजे से सैंथिया के श्रद्धालुओं को सम्यक्त्व दीक्षा प्रदान की।

कार्यक्रम में आचार्य महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री किशोरचंद पुगलिया, उपाध्यक्ष श्री त्रिलोक भूरा, समता महिला मंडल सैंथिया की सदस्या श्रीमती कुसुम पारख, श्री टीकमचंद पुगलिया, स्थानकवासी संप्रदाय की ओर से ओसवाल श्रीसंघ पंचायत के ट्रस्टी श्री वीरेन्द्रकुमार पारख, मूर्तिपूजक संप्रदाय की ओर से ओसवाल श्रीसंघ पंचायत के ट्रस्टी श्री सुशील कोचर व उपासक श्री प्रकाश सुराणा ने आचार्यश्री के समक्ष अपनी भावाभिव्यक्ति दी। सैंथिया तेरापंथ युवक परिषद के युवाओं ने गीत का संगान कर आचार्यश्री के चरणों में अपने भावसुमन अर्पित किए। श्री संजय पाण्डे ने भी गीतिका के माध्यम से आचार्यश्री की अभिवन्दना की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी तथा प्रवास व्यवस्था समिति के संयोजक श्री छत्रपति पुगलिया ने किया।

आचार्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा--'सैंथिया में खूब शांति रहे, सबमें सद्‌भावना, भाईचारा, मैत्री रहे, यथासंभव ईमानदारी रहे व नशा न रहे, यह काम्य है।'

आज मध्याह्न में वीरभूम जिला के जिलाधीश श्री पी. मोहन गांधी तथा पुलिस अधिक श्री एन. सुधीर कुमार ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन मार्गदर्शन प्राप्त किया।

त्रिदिवसीय प्रवास के उपरान्त सैंथिया से पावन प्रस्थान

१९ मई। सैंथिया के त्रिदिवसीय प्रवास के उपरान्त आचार्यप्रवर आज प्रातः अहमदपुर की ओर प्रस्थित हुए। पूज्यप्रवर के विहार के संदर्भ में तेरापंथ समाज के साथ अन्य जैन एवं जैनेतर समाज के सैंकड़ों लोग उपस्थित थे। सबके मंगल भावों को स्वीकार करते हुए आचार्यप्रवर गंतव्य की ओर गतिमान थे। मार्गस्थ नंदीकेश्वरी शक्तिपीठ से संबद्ध लोगों के अनुरोध पर आचार्यप्रवर शक्तिपीठ परिसर में पधारे। बताया गया

कि यह स्थान उन ५१ शक्तिपीठों में से एक है, जहां सती (पार्वतीजी) के अंग आदि गिरे थे। किंवदंती के अनुसार सती का कंठहार यहां गिरा था। आचार्यप्रवर ने शक्तिपीठ परिसर में मंगलपाठ का उच्चारण किया।

परिहारपुर, बतासपुर, ग्रासग्राम और बेलिया के ग्रामीण विहार के दौरान आचार्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीष से लाभान्वित हुए। ग्रासग्राम में वीरभूम के प्रखंड अधिकारी श्री सोमनाथ साधू ने आचार्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया। पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ मार्ग में खड़े मार्ग के कुछ भीतर स्थित बेलिया के कई ग्रामीणों में से एक बोला--'बाबा! हमारे गांव में आपका चरणधूलि नहीं लगेगा?' ग्रामीणजन बोले--'बाबा! यहां एक वैद्य मिट्टी का लेप कर पांवों के दर्द को ठीक करता है। आप लोग भी वह लेप करवा लें। आचार्यप्रवर ग्रामीणों को मुस्कान के साथ आशीष प्रदान कर गंतव्य की ओर बढ़ गए। मार्ग में गले में माला डाले आदित्यदास महाराज नामक एक प्रौढ़ ग्रामीण ने दर्शन कर आचार्यप्रवर से पूछा--'इस धर्म के आराध्य बुद्धदेव हैं क्या?' आचार्यप्रवर ने उससे कहा--'हम जैन हैं। हमारे आराध्य भगवान महावीर हैं।' इस पर वह ग्रामीण बोला--'बाबा! अब जान गया। मुझे जैन धर्म के बारे में जानकारी है।'

आज के विहार पथ के आसपास ताड़ के वृक्ष बहुलता लिए हुए थे। एक ताड़ वृक्ष पर लगे पचासों ताड़फल आचार्यप्रवर की दृष्टि के विषय बने। यत्र-तत्र स्थित पोखरों में खिले हुए कमल के विशालकाय फूल राहगीरों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट कर रहे थे। कुछ पोखरों में शैवाल इस तरह फैली हुई थी, मानों हरा कालीन बिछा दिया गया हो। खेतों में कृषक धान (चावल) की फसल की कटाई में संलग्न थे। कुछ स्थानों पर धान और तूड़ी को पृथक-पृथक करने का कार्य किया जा रहा था। गत दिनों अनेक बार आए तूफान और बारिश से फसल को कुछ नुकसान हुआ है।

पूज्यप्रवर जिस पथ से गतिमान थे, वह निर्मीयमाण सड़क के रूप में था। उबड़-खाबड़ पथ में बिछी लाल मिट्टी वाहनों के आवागमन के कारण उड़ रही थी। यत्र-तत्र लगी मशीनें कार्य की गतिमत्ता की साक्ष्य थीं। प्रायः पूरे विहार में दायीं ओर रेलमार्ग बना हुआ था। उन पर सरपट दौड़ रही रेलें इस मार्ग की व्यस्तता को दर्शा रही थी। रेलों का आवागमन इतना अधिक था कि सड़क मार्ग पर चलने वाली बसों की संख्या भी उसकी तुलना में कम प्रतीत हो रही थी।

आज सैंथिया पुलिस ने आचार्यप्रवर के दर्शन कर विदा ली। जाते-जाते एक पुलिस अधिकारी आचार्यप्रवर से बोला--'हमारा सौभाग्य था कि हमें इतने दिन आपकी सेवा का अवसर मिला।' पूज्यप्रवर मार्ग में साध्वीप्रमुखाजी आदि साध्वियों के प्रवास स्थल में पधारे और वहां कुछ क्षण आसीन हुए। साध्वियों ने वहां आचार्यप्रवर को वन्दना की। साध्वीवृंद के प्रवास से प्रस्थान कर कुल लगभग १५.४ किमी का विहार परिसम्पन्न कर आचार्यप्रवर अहमदपुर स्थित संग्बीत आदर्श विद्यालय में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'जीवन में ज्ञान का महत्त्व है और आचरण का भी महत्त्व है। शास्त्रकार ने कहा--पहले ज्ञान, फिर दया (आचरण)। मनुष्य जीवन में ज्ञान का परम महत्त्व है। आदमी को यथासंभव ज्ञान की आराधना करनी चाहिए। ज्ञान से बढ़कर कोई पवित्र वस्तु नहीं है। जीवन में अज्ञान का अंधकार नहीं रहना चाहिए। ज्ञान अनंत है और जीवनकाल सीमित है, उसमें भी विघ्न-बाधाएं आ सकती हैं। इसलिए सारभूत ज्ञान को ग्रहण करने का प्रयास करना चाहिए। ज्ञान के साथ आचरण भी सम्यक हो तो परिपूर्णता आ सकती है।'

श्री शिवनाथ बंधोपाध्याय ने अपने विद्यालय प्रांगण में आचार्यप्रवर के स्वागत में अपनी श्रद्धासिक्त अभिव्यक्ति दी। आचार्यप्रवर की प्रेरणा से स्थानीय लोगों ने अहिंसा यात्रा की संकल्पत्रयी स्वीकार की।

आज सैंकड़ों-सैंकड़ों ग्रामीण आचार्यप्रवर के दर्शन व यथावसर पावन आशीष से लाभान्वित हुए। रात्रि में तो ग्रामीणों के आने का तांता लग गया। जीवों की हिंसा की संभावना के कारण आचार्यप्रवर के प्रवास

प्रकोष्ठ में 'लाइट' को बंद कर दिया गया था। आचार्यप्रवर की एक झलक पाने के लिए भक्तिमान ग्रामीण अत्यधिक लालायित थे। उनकी भावना को देखते हुए कुछ-कुछ क्षणों के लिए बार-बार लाइट जलाकर प्रकाश किया जा रहा था। रात्रिकालीन कार्यक्रम में ग्रामीणों की उपस्थिति अच्छी संख्या में थी।

आज सायंकालीन गुरुवन्दना के आसपास मुनिवृंद ने आचार्यप्रवर को निवेदन किया कि यहां सर्प जाति के प्राणियों की बहुलता है। आचार्यप्रवर ने सभी संतों को पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि नागराज से डरना नहीं चाहिए। नागकुमार जाति के धरणेन्द्र-पद्मावती तो प्रभु पार्श्व के भक्त रहे हैं। यदि कोई वैसा प्राणी आ भी जाए तो उससे सावधानी रखनी चाहिए और उसे 'उवसग्गहर स्तोत्र' का पाठ कर लेना चाहिए।

हर घर हो शांतिनिकेतन

२० मई। परम पावन आचार्यप्रवर ने प्रातः अहमदपुर से प्रान्तिक की ओर प्रस्थान किया। प्रातःकाल भी अहमदपुर के लोग बड़ी संख्या में आचार्यप्रवर के दर्शनार्थ उपस्थित थे। पूज्यप्रवर ने जहां-जहां अपने चरण रखे, ग्राम्यजन वहां से आचार्यप्रवर की चरणधूलि लेते जा रहे थे। भावविभोर इन ग्रामीणों को पूज्यप्रवर से पावन आशीर्वाद प्राप्त हुआ। टेकड़ा, सिन्धु, रेजारपुर, पाण्डरूई, कालियापुर और चंपाई के ग्रामीणजन पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीष से लाभान्वित हुए। आचार्यप्रवर के दर्शनार्थ ग्रामीण लोग अपने घरों से दौड़-दौड़कर मुख्यमार्ग पर पहुंच रहे थे और आचार्यप्रवर से पावन आशीष ग्रहण कर धन्यता की अनुभूति कर रहे थे। कालियापुर में एक विकलांग बालक अपने परिवार के साथ अपने घर के बाहर बैठा था। आचार्यप्रवर ने उसे देखा तो अपने चरण थाम लिए और उसके पास मंगलपाठ का उच्चारण किया। कालूरामपुर प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों ने आचार्यप्रवर के दर्शन किए तो पूज्यप्रवर ने उन्हें पावन आशीष प्रदान की। १४.७ किमी का विहार परिसम्पन्न कर आचार्यप्रवर प्रान्तिक स्थित टेक्नो इंडिया ग्रुप पब्लिक स्कूल में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के प्रारंभ में शिक्षिका संगीता मिश्रा ने गीत का संगान किया। प्राचार्य श्रीमती मधुमिता पुरी ने आचार्यप्रवर के स्वागत में भावपूर्ण अभिव्यक्ति देते हुए कहा--'मैं आचार्यश्री का सादर स्वागत करते हुए गौरव का अनुभव कर रही हूं। हमारे संस्थान के लिए यह महान अवसर है कि एक महान ऋषि का यहां पावन पदार्पण हुआ है। मुझे जब आपके आगमन की सूचना मिली मेरा दिल खुशी से झूम उठा। मैं अपनी किस्मत पर विश्वास नहीं कर पा रही हूं कि आप जैसे महापुरुष का प्रवास हमारे यहां हो रहा है। दुनिया को आपकी बहुत जरूरत है। मैंने जब आपके भक्तों से आपकी तपस्यामय जीवनशैली के बारे में सुना तो मुझे आश्चर्य हुआ कि आचार्यश्री भयंकर गर्मी में भी पंखे का उपयोग नहीं करते और सूर्यास्त के बाद एक बूंद भी पानी नहीं पीते। मेरे मन और मस्तिष्क में आपके लिए अत्यन्त सम्मान का भाव है। आप हमें आशीर्वाद प्रदान करें।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'व्यवहार का एक माध्यम है वाणी। बोलकर आदमी अपने विचारों को अभिव्यक्त कर सकता है। भाषा विचारों के आदान-प्रदान का सशक्त माध्यम होती है। आदमी को भाषा का संयम और विवेक रखना चाहिए। इन दोनों के बिना आदमी असभ्य बन सकता है। वाणी के दो दोष बताए गए--बात को व्यर्थ लंबाना और सारहीन बोलना। इनके विपरीत वाणी के दो गुण बताए गए--परिमित बोलना और सारपूर्ण बोलना। शास्त्रकार ने कहा--बिना पूछे मत बोलो। पूछने पर झूठ मत बोलो। गुस्से को असफल बनाओ। प्रिय-अप्रिय को धारण करो।

गुस्सा मन में आ भी जाए तो उसको शरीर और वाणी में नहीं आने देना चाहिए। गुस्सा करना तो हार होती है। किसी भी क्षेत्र में गुस्सा काम का नहीं होता। सामने वाला गुस्सा करे तो भी गुस्सा नहीं करना चाहिए। पारिवारिक जीवन में सहन करने की शक्ति रहनी चाहिए। एक-दूसरे को सहना चाहिए। गलती पर

यथावसर कहना चाहिए और शांति से रहना चाहिए।'

कुछ ही किलोमीटर दूर पर स्थित रविन्द्रनाथ टैगोर से संबंधित 'शांतिनिकेतन' के संदर्भ में आचार्यप्रवर ने कहा-- शांतिनिकेतन पास ही है। वह तो एक स्थान का नाम है। हर घर-हर हृदय शांतिनिकेतन बन जाए तो विशेष बात हो सकती है।'

दस माह की विदेश यात्रा तथा फ्लोरिडा इंटरनेशनल युनिवर्सिटी मियामी में आठ माह तक अध्यापन कार्य कर श्रीचरणों में पहुंची समणी सत्यप्रज्ञाजी और समणी रोहिणीप्रज्ञाजी ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

आज रात्रि में राजगढ़ निवासी प्रान्तिक प्रवासी श्री जुगलकिशोर सोमानी ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए और बोले--'आचार्यश्री! मैं यहां से कुछ दूरी पर रहता हूं। संस्कार चैनल पर आपका प्रवचन रोज सुनता हूं। मुझे वह बहुत अच्छा लगता है। आप कल मार्ग में मेरे घर में पधारें।'

आचार्यप्रवर का स्वामी निरंजनानंदजी से वार्तालाप

२२ अप्रेल को परम पूज्य आचार्यप्रवर का मुंगेर स्थित बिहार योग भारती में पदार्पण हुआ। वहां आचार्यप्रवर का स्वामी निरंजनानंदजी से लंबा वार्तालाप हुआ। वार्तालाप के दौरान मुख्यनियोजिकाजी, साध्वीवर्याजी और मुख्यमुनिश्री आदि साधु-साध्वियां भी उपस्थित थे। यहां प्रस्तुत हैं उस वार्तालाप के कुछ अंश।

आचार्यप्रवर--'मुंगेर के बारे में पहले सुना था, यात्रा के क्रम में आज यहां आना हो गया।'

स्वामी निरंजनानंदजी--'मुझे बहुत ही प्रसन्नता हो रही है। हमारे गुरुजी का आचार्य तुलसीजी और आचार्य महाप्रज्ञजी से बहुत पुराना संपर्क रहा है और अब आपका सान्निध्य व स्नेह मुझे मिल रहा है।'

स्वामी निरंजनानंदजी--'आप बिहार में कब तक हैं?'

आचार्यप्रवर--'अभी भागलपुर जाना है। वहां अक्षय तृतीया का कार्यक्रम है। उसके बाद कोलकाता की ओर बढ़ना है।'

स्वामी निरंजनानंदजी--'झारखंड में आप देवघर भी जाएंगे क्या?'

आचार्यप्रवर--'संभवतः हमारा अभी देवघर जाने का कार्यक्रम नहीं है।'

स्वामी निरंजनानंदजी--'देवघर के पास हमारी एक संस्था है। इस बार आप नहीं पधारें तो अगली बार अवश्य पधारें। बस आपके बार-बार दर्शन होते रहें।'

आचार्यप्रवर--'मुझे अच्छा नहीं लग रहा है कि आप नीचे बैठे हैं।

स्वामी निरंजनानंदजी--मुझे तो प्रसन्नता हो रही है कि आपके श्रीचरणों में बैठने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है।

आचार्यप्रवर--'मैं भी नीचे ही बैठ जाऊं?

स्वामी निरंजनानंदजी--नहीं, आपको तो ऊपर ही विराजना होगा। मैं बाद में ऊपर बैठ जाऊंगा।

स्वामी निरंजनानंदजी--अभी मेरे पंचाग्नि आतापना का क्रम चल रहा है। यह मेरी इस रूप में साधना का अंतिम वर्ष है। जब प्रथम वर्ष का था, लगभग इसी समय आपकी शिष्या साध्वीश्री निर्वाणश्रीजी यहां आई थी। अब जब पूर्णाहूति का समय है, तब आपश्री यहां पधारे हैं।

आचार्यप्रवर--'आप प्रतिवर्ष आतपना लेते हैं?

स्वामी निरंजनानंदजी--हां, हर वर्ष।

आचार्यप्रवर--कितने दिनों के लिए?

स्वामी निरंजनानंदजी--मकर संक्रान्ति से कर्क संक्रान्ति तक। १५ जनवरी से १५ जून तक। अर्थात् पांच

महीने तक। इस दौरान शनिवार और रविवार को हम छुट्टी करते हैं। यह अंतिम वर्ष है। इस वर्ष के बाद भी आतपना का क्रम चलेगा, किन्तु इस रूप में नहीं।

स्वामी निरंजनानंदजी--दिल्ली में आपका जो अध्यात्म साधना केन्द्र है, वहां धर्मानंदजी हैं?

आचार्यप्रवर--हां, धर्मानंदजी वहां थे। उनका देहावसान हो गया।

स्वामी निरंजनानंदजी--सन् १९७५ से उस केन्द्र से हम लोगों का अच्छा संबंध रहा है। वहां से हमें आपके सूचना-समाचार हमेशा मिलते रहते था। (आचार्यप्रवर निर्धारित कक्ष में प्रातराश करने पधारे। उसके बाद पुनः पूज्यप्रवर वार्तालाप स्थल पर पधारे और पट्टासीन हुए। स्वामी निरंजनानंदजी परिपार्श्वस्थ पट्ट पर आसीन हो गए। साधु-साध्वियों और आश्रम के संन्यासियों की उपस्थिति में दोनों विभूतियों के बीच पुनः वार्तालाप शुरू हुआ।)

स्वामी निरंजनानंदजी--हमारे गुरु स्वामी सत्यानंदजी ने १९८८ में आसन छोड़ दिया। उन्होंने कहा कि मैं संन्यास मार्ग में आश्रम और चेला बनाने नहीं आया था। मैं आत्मानुसंधान के लिए आया था। उसके बाद में उन्होंने पदयात्रा की। त्रयम्बकेश्वर में उन्हें कुछ दिव्य अनुभूति हुई कि तुम चिताभूमि में जाओ। चिताभूमि देवघर का क्षेत्र माना जाता है। देवघर में खोजने पर जैसा दिव्य अनुभूति में नजर आया था, वैसा ही स्थान मिल गया। उन्होंने बारह वर्ष तक पूर्ण एकांत जीवन बिताया। उस दौरान उन्होंने अनेक अनुष्ठानों आदि का अभ्यास किया। अपने जीवन के अंतिम वर्षों में उन्होंने इस क्षेत्र के लिए कार्य किया और हमसे करवाया। मैंने भी अब अपना कार्य इन लोगों को सौंप दिया। यह मेरा क्षेत्र (परिसर) है। साधनाकाल में इससे बाहर नहीं जाना, यह मेरा संकल्प है। स्वामीजी ने मुझसे कहा कि लोग सोचते हैं कि मैंने तुम्हें विरासत में संस्था दी है तो यह गलत है। विरासत में मैंने तुम्हें संन्यास दिया है। सन् २००९ के दिसम्बर माह में स्वामीजी का महाप्रयाण हुआ और इसके बाद सन् २०१० के मई माह में आचार्य महाप्रज्ञजी का महाप्रयाण हुआ। देवघर और मुंगेर का सौ साल बाद भी संबंध बना रहे, इसलिए मैंने स्वामीजी की छाया समाधि यहां स्थापित कर दी।

मैं जब से संस्था के दायित्व से सेवानिवृत्त हुआ हूं, तब से मैं साधना, लेखन, अध्ययन आदि कार्य कर रहा हूं। मेरे बाद स्वामी सूर्यप्रकाशजी जो देवघर का कार्य देख रहे हैं और यहां का कार्य स्वामी आत्ममैत्रीजी देखती हैं। हम आपको कुछ साहित्य भी भेंट करना चाहते हैं। (उन्होंने कुछ पुस्तकें आदि पूज्यप्रवर को उपहृत कीं। उन्होंने फलों से भरी एक टोकरी पूज्यप्रवर को अर्पित करने की भावना से पूज्यप्रवर के समक्ष प्रस्तुत की।)

आचार्यप्रवर--(जानकारी प्रदान करते हुए) इन फलों को लेना तो दूर हम इन्हें छू भी नहीं सकते। हमारी परंपरा में फल को सजीव माना गया है। फलों को छूने से भी इनकी आत्मा को तकलीफ हो सकती है। इसलिए इन्हें हम छू भी नहीं सकते। इतना ही नहीं, हम चल रहे हैं और मार्ग में हरियाली आ गई तो हम सामान्यतया उस पर पांव भी नहीं रख सकते।

स्वामी निरंजनानंदजी--आपने एकदम ठीक कहा। मैं भी फल नहीं खाता। मुझसे जब पूछा जाता है कि आप फल क्यों नहीं खाते तो मैं बहुत बार विनोद में कहा करता हूं कि कृष्णजी ने कहा है कि फल की इच्छा मत करो।

आचार्यप्रवर--हम लोग जैन धर्म से हैं। इसमें दो विचारधाराएं हैं--दिगम्बर और श्वेताम्बर। दिगम्बर मुनि नग्न रहते हैं। श्वेताम्बर मुनि सफेद कपड़ा रखते हैं। हम श्वेताम्बर परंपरा में हैं। श्वेताम्बर परंपरा में भी दो विचारधाराएं हैं--मूर्तिपूजक और अमूर्तिपूजक। हम लोग अमूर्तिपूजक परंपरा में हैं। अमूर्तिपूजक परंपरा

में भी दो भेद हैं--स्थानकवासी और तेरापंथ। हमारे संप्रदाय का नाम है तेरापंथ। इसका जन्म करीब २५७ वर्ष पूर्व हुआ था। आचार्य भिक्षु हमारे प्रथम गुरु हुए थे। उनके बाद उनकी पीढ़ियां आगे से आगे चलीं। हमारे नवमें गुरु हुए आचार्य तुलसी। उनके उत्तराधिकारी हुए आचार्य महाप्रज्ञजी। इस प्रकार अतीत में हमारी दस पीढ़ियां हो चुकी हैं।

स्वामी निरंजनानंदजी--आप ग्यारहवें आचार्य हैं।

आचार्यप्रवर--हमारे यहां योग-ध्यान की जो पद्धति प्रचलित है उसका नाम है--प्रेक्षाध्यान। यह गुरुदेव तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञजी की देन है।

स्वामी निरंजनानंदजी--'प्रेक्षाध्यान' पत्रिका हमारे यहां आती है।

आचार्यप्रवर--आचार्य महाप्रज्ञजी ने अपने जीवन में योग, ध्यान, साधना आदि में भी अपना समय नियोजन किया। गुरुदेव तुलसी ने उन्हें अपना उत्तराधिकारी बनाया। हमारी परम्परा में वर्तमान आचार्य भावी आचार्य का निर्णय करते हैं। सामान्यतया वर्तमान आचार्य के महाप्रयाण के बाद में वह निर्णित व्यक्ति आचार्य बनता है। आचार्य तुलसी ने नया कार्य किया कि अपने जीवनकाल में ही आचार्यपद को छोड़ दिया और महाप्रज्ञजी को आचार्य पद पर स्थापित कर दिया। गुरुदेव तुलसी का सन् १९९७ में महाप्रयाण हो गया। आचार्य महाप्रज्ञजी ने वृद्धावस्था में भी यात्राएं की थीं। जैसा कि आपने कहा कि मई सन् २०१० में आचार्य महाप्रज्ञजी का महाप्रयाण हुआ। संयोग से आज उनके महाप्रयाण की वार्षिक तिथि है। वैशाख कृष्णा एकादशी के मध्याह्न में उनका महाप्रयाण हुआ था। आपकी परंपरा का आचार्य महाप्रज्ञजी से पुराना संबंध भी रहा है और अनायास ही हम उनके महाप्रयाण दिवस पर यहां आ गए।

हमारे यहां सभी साधु-साध्वियों पर मुख्य अनुशासन एक ही आचार्य का होता है। वे धर्मसंघ में सर्वोच्च होते हैं। सभी साधु-साध्वियां उनकी आज्ञा के अधीन होते हैं। वे आचार्य के निर्देश से कार्य करते हैं। (पूज्यप्रवर ने साध्वीप्रमुखाजी, मुख्यनियोजिकाजी, साध्वीवर्याजी, मुख्यमुनि आदि साधु-साध्वियों का परिचय एवं उनके दायित्व के विषय में अवगति प्रदान की। पूज्यप्रवर ने उन्हें समणश्रेणी और मुमुक्षुश्रेणी के विषय में भी जानकारी दी।)

स्वामी निरंजनानंदजी--आपका संघ बहुत ही व्यवस्थित है और प्रारम्भ से व्यवस्थित रहा है। इसका इतिहास भी प्राचीन है। जिस तरीके से आप कार्य कर रहे हैं, वह बहुत ही प्रेरणादायक है।

मुनि दिनेशकुमारजी--आज एक संयोग और बन गया कि आचार्य महाप्रज्ञजी का आज के दिन महाप्रयाण हुआ तो आज के दिन आचार्यश्री महाश्रमणजी निसर्गतः तेरापंथ के आचार्य बने थे।

स्वामी निरंजनानंदजी--आज के दिन के संदर्भ में हम कुछ भेंट करना चाहेंगे तो आप सीधा मना कर देंगे। इसलिए मेरा प्रणाम स्वीकार कर लिजिए।

आचार्यप्रवर--हमारे मुख्यतः पांच नियम हैं--सर्वप्राणातिपातविरमण, सर्वमृषावादविरमण, सर्वअदत्तादानविरमण, सर्वमैथुनविरमण और सर्वपरिग्रहविरमण। सर्वरात्रिभोजनविरमण भी हमारा व्रत है। हिंसा नहीं करना। आप देखिए कि वाहन में बैठने से जीवों की हिंसा हो सकती है। रात्रि में न खाना न पीना। रात्रि में भोजन सामग्री और पानी में जीव गिर सकते हैं। इसलिए सूर्यास्त से सूर्योदय तक कुछ भी खाना-पीना नहीं, यह हमारे जीवनभर का नियम है। सत्य, अचौर्य और ब्रह्मचर्य की साधना करना भी हमारा मुख्य नियम है। अपरिग्रह की साधना के अंतर्गत एक पैसा भी हमारे पास नहीं हो सकता। कोई मठ, मंदिर, आश्रम आदि भी हमारे मालिकाना में नहीं हो सकता। (पूज्यप्रवर ने उन्हें ईर्या आदि समितियों, भिक्षाविधि आदि की जानकारी भी प्रदान की।)

स्वामी निरंजनानंदजी--आप लोगों का प्रेम और आशीर्वाद बड़ी चीज होती है। हमें आज वही मिल गया। आप हमें कोई आदेश दीजिए।

आचार्यप्रवर--आश्रम में खूब अच्छी साधना चले, अच्छा क्रम रहे।

स्वामी निरंजनानंदजी--आपकी चरणरज यहां पड़ गई, हम कृतार्थ हो गए, धन्य हो गए।

(महासभा के प्रधान न्यासी श्री हंसराज बेताला ने तेरापंथ धर्मसंघ का साहित्य स्वामी निरंजनानंदजी को भेंट किया।)

स्वामी निरंजनानंदजी--हमारी परंपरा की शुरुआत स्वामी शिवानंदजी से हुई। उन्होंने अपने शिष्यों को योग और वेदांत का प्रशिक्षण देकर कहा कि अब तुम लोग बाहर जाकर इसका प्रचार करो तो स्वामी सत्यानंदजी यहां मुंगेर आए। यहां आने से पहले उन्होंने एक पदयात्री के रूप में नौ साल तक भारत का भ्रमण किया। इस भ्रमण के द्वारा उन्होंने लोगों की आवश्यकता की जानकारी प्राप्त की। फिर उन्होंने योग पर अनुसंधान शुरू किया कि ध्यान, आसन आदि का शरीर, मन, मस्तिष्क और रोग पर क्या असर पड़ता है? शांति, स्थिरिता, एकाग्रता की प्राप्ति कैसे होती है आदि-आदि। इन अनुसंधानों के माध्यम से उपचार के बहुत से उपाय हमने विकसित किए। (प्रसंगवश जैन विश्वभारती का जिक्र आया तो स्वामी निरंजनानंदजी ने कहा) जैन विश्वभारती और बिहार योग भारती का जन्म लगभग एक साथ हुआ था। विश्वविद्यालय के रूप में आप हमसे एक वर्ष बड़े हैं। आपके विश्वविद्यालय के दूसरे कुलपति रामजीसिंह का भी बिहार योग भारती की स्थापना में सहयोग रहा।

मुनि कुमारश्रमणजी--दोनों परंपराओं की कई चीजें प्रायः समकालीन रही हैं। आचार्यश्री और आपके जन्म में मात्र दो वर्ष का अंतर है। आचार्य महाप्रज्ञजी और स्वामी सत्यानंदजी की आयु में भी मात्र तीन वर्ष का अंतर था और उन दोनों के महाप्रयाण में तो कुछ ही महीनों का अंतराल रहा।

स्वामी निरंजनानंदजी--जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय एक साल पहले बना और बिहार योग भारती एक साल बाद। यहां योग से संबंधित अनेकानेक पाठ्यक्रम चल रहे हैं। अणुव्रत और प्रेक्षाध्यान--इन दोनों विषयों को भी हम यहां पढ़ाते हैं।

स्वामी निरंजनानंदजी--आचार्यश्री! आपको छोड़ने की इच्छा नहीं हो रही है। इच्छा होती है कि आप यहीं रहें।

वार्तालाप के उपरान्त आचार्यप्रवर ने आश्रम परिसर में परिभ्रमण किया। इस दौरान निरंजनानंदजी ने पूज्यप्रवर के साथ रहकर परिसर के विषय में अवगति प्रस्तुत की। पूज्यप्रवर ने उस स्थान का भी अवलोकन किया जहां स्वामी निरंजनानंदजी पंचाग्नि तप करते हैं।

स्वामी निरंजनानंदजी--जब केदारनाथ में बाढ़ आई, उससे कुछ देर पहले हम वहीं थे। हम निकले ही थे कि वहां भारी तबाही मच गई।

मुनिकुमारश्रमणजी--जिस समय काठमांडू में भूकंप आया, तब आचार्यप्रवर वहीं थे। आचार्यप्रवर पंडाल से ज्यों ही बाहर पधारे कि भूकंप आया और पूरा पंडाल धराशायी हो गया। हम जिस इमारत में थे, वह करीब डेढ़ सौ साल पुरानी थी। उसके जिन-जिन हिस्सों में आचार्यप्रवर और संतों का प्रवास हो रहा था, उन हिस्सों में विशेष नुक्सान नहीं हुआ, किन्तु शेष हिस्सा गिर गया, क्षतिग्रस्त हो गया। इतना होने पर भी कोई भी संत हताहत नहीं हुआ।

स्वामी निरंजनानंदजी--सब आचार्यश्री की कृपा है।

पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश स्वामी निरंजनानंदजी को जानकारी प्रदान करते हुए कहा--इस वर्ष का हमारा

चतुर्मास कोलकाता क्षेत्र में है। फिर २०१८ का चतुर्मास चेन्नई में रखा है।

स्वामी निरंजनानंदजी--(अनुरोध के स्वर में) एक चतुर्मास मुंगेर में कीजिए ना। गंगा किनारे नया आश्रम बन रहा है। वहां बहुत ही अच्छे रूप में चतुर्मास हो जाएगा। कभी संभव हो तो हम पर अवश्य कृपा करें।

आचार्यप्रवर--अभी तो हमारे सन् २०२० तक के चतुर्मास तय हैं।

स्वामी निरंजनानंदजी--आपके ऊपर छोड़ रहा हूं। जब आपकी इच्छा हो, मुंगेर में एक चतुर्मास अवश्य करें। (स्वामी निरंजनानंदजी अपनी निर्धारित सीमा तक पूज्यप्रवर को पहुंचाने साथ चले। वहां उन्होंने आचार्यप्रवर को बद्धांजलि नतसिर वंदन किया।)

स्वामी निरंजनानंदजी--आचार्यश्री! मेरे सर पर हाथ रखिए।

आचार्यप्रवर--आपके सर पर क्या हाथ रखें। (स्वामी निरंजनानंदजी ने आचार्य के करकमलों को आग्रहपूर्वक खिंचते हुए अपने सर पर रख लिया।)

आचार्यप्रवर--यहां आकर हमें अच्छा लगा।

स्वामी निरंजनानंदजी--पुनः शीघ्र दर्शन की अभिलाषा रखता हूं।

आचार्यप्रवर--आपकी साधना के प्रति मंगलकामना।

स्मृति-संबल

- सरदारशहर निवासी श्री मूलचंद मालू का स्वर्गवास हो गया। वे सरदारशहर के एक प्रतिष्ठित व्यक्तित्व थे। दिल्ली तेरापंथ समाज में भी उनका वरिष्ठ स्थान था। उनकी उदारता और स्पष्टवादिता यदा-कदा मुखर होती रहती थी। समाजसेवा के विभिन्न आयामों द्वारा उन्होंने अपनी विशेष पहचान बनाई। आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ एवं आचार्य महाश्रमण की सेवा में यथासमय पहुंचा करते थे। श्री मालूजी उद्योग और व्यवसाय जगत की एक महाशक्ति के रूप में उभरे। उन्होंने अपने व्यवसाय को देश-विदेश में बृहत् रूप में स्थापित किया। उनके उदार आर्थिक सहयोग से समाजोत्थान के अनेकानेक महत्त्वपूर्ण कार्य संपादित हुए। उनकी धर्मपत्नी विजयादेवी मालू एक श्रद्धाशील श्राविका है। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल को उनका सक्रिय योगदान प्राप्त है। उसके पुत्र श्री विकास मालू में मालूजी के कर्तृत्व की झलक दिखाई देती है। मालू परिवार की संघ एवं संघपति के प्रति समर्पित है।
- सोजतरोड निवासी, बंगलुरु-चेन्नई प्रवासी श्रीमती बदनीबाई दरला (धर्मपत्नी-स्व.श्री केवलचन्द दरला) का ४३ दिन के प्रलंब संथारे में स्वर्गवास हो गया। वह सरल स्वभावी एवं भद्र प्रकृति की महिला थीं। उन्होंने अपने कषायों को अत्यल्प किया था। अपने पति केवलचन्दजी को प्रेक्षाध्यान आदि कराने में पूरा सहयोग दिया। तपस्या के क्रम में एकान्तर, बेले, तेले, अठाई, ग्यारह आदि अनेक तपस्याएं संपन्न कीं अन्तिम समय में साध्वी प्रज्ञाश्रीजी आदि साध्वियों का अच्छा सहयोग उन्हें प्राप्त हुआ। पूरा परिवार संघनिष्ठ और संस्कारी है।
- चाड़वास निवासी दलखोला प्रवासी श्रीमती कानकंवरीदेवी बच्छावत (धर्मपत्नी-श्री मूलचन्दजी बच्छावत) का देहावसान हो गया। वे दलखोला महिला मंडल की सक्रिय महिला थीं। अनेक वर्षों से नवकारसी, जप, स्वाध्याय आदि का क्रम था, तपस्या में भी अच्छी रुचि थी। दलखोला तथा उसके आसपास विचरण करने वाले चारित्रात्माओं की मनोयोग से सेवा करती थीं। उनके दोनों पुत्र धर्मसंघ की सेवा में जागरूक हैं।
- तारानगर निवासी कोलकाता प्रवासी श्री हुलासचन्द राखेचा का देहावसान हो गया। वे श्रद्धाशील श्रावक

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/15-17 Wed.-Thu.
L.No.-U (C) 200/2015-2017
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

थे। प्रतिदिन तीन-चार सामायिक, जप, स्वाध्याय आदि का क्रम था। वे प्रतिवर्ष केन्द्र की लंबी उपासना करने वाले बारहव्रती श्रावक थे।

- बीदासर निवासी कोलकाता प्रवासी श्रीमती सुरजीदेवी बैंगाणी (धर्मपत्नी-स्व.सोहनलालजी बैंगाणी) का देहान्त हो गया। उन्होंने अल्पायु में ही पति वियोग की विषम परिस्थितियों को समतापूर्वक सहन किया। विगत बीस वर्षों से प्रतिवर्ष चतुर्मासकाल में गुरुदेव की सेवा-उपासना का क्रम रहता था। तपस्या में भी उनकी अच्छी रुचि थीं। अनेक थोकड़ों को भी उन्होंने कंठस्थ किया था। पूरा बैंगाणी परिवार संघ और संघपति के प्रति समर्पित है।
- पेटलावद निवासी श्रीमती लक्ष्मीदेवी भंडारी (धर्मपत्नी-श्री हरकचन्दजी भंडारी) का आकस्मिक निधन हो गया। वे तैंतीस वर्षों से प्रतिवर्ष गुरु-उपासना, प्रतिदिन सामायिक, नवकारसी, रात्रि भोजन परित्याग आदि का क्रम रखती थीं। सुपात्र दान एवं तपस्या में उनकी अच्छी रुचि थीं। आसपास विचरण करने वाले साधु-साध्वियों की रास्ते की सेवा में सदा तत्पर रहती थीं। भक्तामर आदि अनेक स्तोत्र और धार्मिक गीतिकाएं उन्हें कंठस्थ थीं। तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष के रूप में वर्षों तक उन्होंने अपनी सेवाएं दीं। पूरा भंडारी परिवार शासनभक्त और समर्पित परिवार है।

सुधारकर पढ़ें

विज्ञप्ति वर्ष २३ अंक ६ के अंतिम पृष्ठ पर प्रकाशित शासनश्री मुनि मोहनलालजी 'शार्दूल' को मुनि मोहनलालजी शार्दूल पढ़ा जाए।

आदर्श साहित्य संघ को भेंट

२१००/- श्री सोहनराजजी एवं श्रीमती मोहिनी देवी संकलेचा (अहमदाबाद) के वैवाहिक जीवन की ५१वीं वर्षगांठ पर उनके सुपुत्र व पुत्रवधू राजीव-ममता, अरविंद-अनीता, सुपौत्र आदर्श, अर्हम, सुपौत्री ध्वनि संकलेचा द्वारा प्रदत्त।

२१००/- श्रीमती सूरजकंवर-भंवरलालजी मरलेचा (कंटालिया-चेन्नई) के वैवाहिक जीवन की ५०वीं वर्षगांठ (स्वर्णजयंती) के उपलक्ष्य में उनके सुपुत्र व पुत्रवधू महेन्द्रकुमार-रेखा, सुपौत्र रचित, रौनक मरलेचा द्वारा प्रदत्त।

२१००/- श्रीमती सूरजकंवर-भंवरलालजी मरलेचा (कंटालिया-चेन्नई) के वैवाहिक जीवन की ५०वीं वर्षगांठ (स्वर्णजयंती) के उपलक्ष्य में विनोद-सुनीता, विक्रम-नुपूर, विहान सोलंकी, श्रीपेराम्बूर तथा सुरेश-वनिता, अंकेश, प्रियंका आंचलिया चेन्नई द्वारा प्रदत्त।

पत्र व्यवहार की दृष्टि से हमारा पता है--

केशवप्रसाद चतुर्वेदी, प्रबन्धक-आदर्श साहित्य संघ, अणुव्रत भवन, २१० दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-११०००२ फोन नं-७३८४४३६५६०, ०७३८४४३६५६२
दिल्ली कार्यालय का नं.-२३२३४६४१, ६३१०२३४६४१

●

स्वामी आदर्श साहित्य संघ के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक हेमराज बैद के द्वारा पवन प्रिंटर्स, जे-६, नवीन शाहदरा, दिल्ली ११००३२ से मुद्रित एवं आदर्श साहित्य संघ, अणुव्रत भवन, २१० दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली ११०००२ में प्रकाशित। सम्पादकः केशवप्रसाद चतुर्वेदी